दिनांक :- 15-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेकाई :- ६०

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की क्रांति

(5) प्रवासी चीनियों का योगदान — कृषियोग्य भूमि के अभाव में तथा प्राकृतिक प्रकोपों से भयभीत होकर उनेक चीनी आजीविका के लिए विदेशों में जाकर बसने लगे संयुक्त राज्य अमरीका में इस प्रकार के लोगों की अत्यन्त आवश्यकता थी जो दूसरी मजदूर कर सके। अतः काफी संख्या में चीनी वहँ गए; परंतु 1890 में अमरीका में

प्रवेश निषेध संबंधी कानून बनाए गए तथा मकानों में भी उनका प्रवेश निषेध हो गया। फिर भी 1911 में लगभग 3 लाख चीनी अमरीका में थे। अमरीका का द्वार बन्द होने पर चीनियों ने हवाई द्वीप, फिलीपीन द्वीप समूह मलय राज्य संघ कनाडा एवं सिंगापुर में जाकर बसना शुरू किया। हवाई में शीघ्र ही उनका प्रवेश वर्जित हो गया तथा 1902 में निषेधज्ञा फिलीपीन में भी लागू हो गई। 1901 में कनाडा में भी चीनी प्रवेश पर 500 डालर का आर्थिक प्रतिबंध लगा दिया गया। मलय संघ तथा सिंगापुर में 1911 में लगभग 13 लाख चीनी बस चुके थे और विदेशों में लगभग 15 लाख चीनी विद्यमान थे। बड़ी संख्या में चीनी लोगों का विदेशों में प्रवास इस तथ्य को पुष्टि करता है कि चीन में जनता की आर्थिक दशा शोचनीय थी। इधर चीनी प्रवासी विदेशों से काफी धन घर भेजने लगे जिससे उनके परिवारों में समृद्धि आई और

जो अन्य युवा व्यक्तियों के लिए ईर्ष्या का कारण बन गई। चीन के प्रवासियों ने पश्चिम के आधुनिक विचारों से प्रभावित हो अपने देश की बिगड़ती हुई व्यवस्था को सुधारने और क्रांति के लिए पैसे दान में दिए। इन लोगों के परिवार क्रांति की भावना को विकसित करने में सहायक सिद्ध हुए।

प्रवासी-चीनी मजदूरों के अतिरिक्त विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने भी क्रांति को प्रभावित किया। 1905 के बाद बड़ी संख्या में चीनी छात्र विद्याध्ययन के लिए विदेश गए। वे बड़ी संख्या में जापान गए। विदेशों में स्वदेश लौटने पर ये नागरिक क्रांति करना चाहते थे। क्योंकि वे पश्चिमी देशों के ज्ञान-विज्ञान, राजनीति, दर्शन आदि से काफी प्रभावित थे। वे देखते थे कि उनके देश में पश्चिमी ढंग की शिक्षण-संस्थाओं का अभाव है और चीन सब

तरह से पिछड़ा है। इसके लिए मंचू संस्कार को उत्तरदायी समझते थे।

(6) डॉ० सनयात सेन का योगदान— डॉ० सनयात सेन चीनी क्रांति के जनक है। उनका जन्म दक्षिण चीन मे कैंटन मे 1866 मे एक किसान परिवार मे हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा होनोलूलू मे हुई। इसके पश्चात ब्रिटिश हांगकांग मे उन्होने डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त की। हांगकांग मे ही उन्हे विश्वास हो गया था कि चीन की सुरक्षा के लिए मंचू का विनाश करना पड़ा था। 1895 मे उसके नेतृत्व मे कैंटन मे क्रांतिकारीयो का प्रथम उपद्रव हुआ। जिसके असफल होने पर उन्हे जान बचा कर भागना पड़ा। वे लंदन और अन्य पश्चिमी देशो मे गए। उनके विचारो मे प्रवासी चीनी बड़े प्रभावित हुए। उनकी मूल क्रांतिकारी संस्था हिसंग चुंग हुई (Society for the Regeneration of China) की शक्ति प्रवासी चीनियो पर आधारित थी। बाद मे इसका नाम तुंग मेंगहुई दे दिया

गया। इसके उद्देश्य मंचू वंश का पतन चीन में गणतंत्र की स्थापना विश्व शान्ति, राष्ट्रीयता, जापान के साथ सहयोग एवं चीनी को क्रांति के लिए खड़ा करना था। वस्तुतः डॉ० सेन क्रांतिकारी थे। उसके विचारों से प्रभावित होकर चीन की जनता ने 1906, 1908 एवं 1911 में विद्रोह किया था। इस प्रकार 1911 की क्रांति में डॉ० सेन के व्यक्तित्व तथा दर्शन को बड़ा योगदान दिया।

(3) क्रांतिकारी दलों का संगठन — चीन में असंतोष का वातावरण तैयार करके मंचू राजवंश के पतन के लिए अनेक क्रांतिकारी दल सक्रिय थे। अनेक गुप्त क्रांतिकारी समितियों का निर्माण हो चुका था। जो 1898 से ही सरकार के विरुद्ध आवाज उठाने लगी। 1905 में डॉ० सेन ने टोकियो में एक क्रांतिकारी दल का निर्माण कर लिया। टोकियो के ब्लैक ड्रैगन सोसाइटी (Black Dragon Society)

के उच्च कार्यालय मे जुलाई 1905 में चीन के छात्र एकत्र हुए और उन्होंने डॉ० सेन के नेतृत्व में एक क्रांतिकारी दल का निर्माण कर लिया जिसका नाम तुंग-मेंग-हुई था। विभिन्न नगरों में इसकी शाखाएँ खोली गई। सत्रह प्रांतों में इस दल के सदस्यों की संख्या तीन लाख तक पहुँच गई। डॉ० सेन के अतिरिक्त कांग-यु-वेई सुधारों की माँग कर रहे थे। क्रांतिकारी दलों के सहयोग से ही 1911 मे चीन में क्रांति हुई।

(8) बौद्धिक जागरण— 1905 मे चीन की प्राचीन परीक्षा पद्धति पद्धति का अन्त कर दिया गया और राजकीय पदों पर नियुक्त के लिए आधुनिक शिक्षा को महत्व दिया गया। इसलिए 1905 के बहुत से चीनी विद्यार्थी अमरीका और यूरोप जाने लगे। वे वहाँ की शिक्षा शासन-पद्धति एवं रहन-सहन से प्रभावित हो कर वापस लौटते थे। चीन के अधिकांश विद्यार्थी जापान में थे। 1898 मे चीन की सरकार माओ के अध्ययन के

जापान मे ताओ दो बून काई की स्थापना हुई। लियांग छी-छाओ का विचार था कि जापान मे ताओ दो बून था कि जापान पूर्व और पश्चिम की सांस्कृतियों का संगम-स्थल है और उसका दायित्व पूर्व की सांस्कृति को पश्चिमी संस्कृति के स्तर पर तक पहुँचना है। उसने जापान में रहकर पश्चिमी विद्याओं का अध्ययन किया और व्यक्तिवाद नागरिकता, संसद, संविधान एवं लोकतंत्रीय सरकार का समर्थन और प्रतिपादन किया। इसके प्रचार के लिए उसने 1898 मे छिंग-ई-पाओ (लोकमत) 1902 मे शिन मिन त्सुंग-पाओ (राष्ट्रीगत आत्मा) नामक पत्रिकाएँ प्रकाशित किया। चंग-त्साह-छांग ने चीनान मे ज्यु-ली हुई स्वतंत्र समाज कायम किया। इसमे सैनिक अधिकारी 1900 मे लाओ हुई (भाइयों और बहनों का समाज) के साथ हांको मे विद्रोह किया।